Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 8 | AUGUST 2020

रोहतास जिले में फसलों का बदलता स्वरूप एवं जीवन की गुणवत्ता पर उसका प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. उमेश कुमार [1]

[1] **भूगोल विभाग, मगध विश्व विद्यालय बोध गया**

ABSTRACT:

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ कृषि उत्पादन के बदलते स्वरूप का लोगो के जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। वर्तमान समय में कृषि तकनीकी के उपयोग के कारण फसलों के उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ के किसानों के जीवन स्तर में सुधार दिखाई देने लगा है उपरोक्त तथ्यों कि पुष्टी हेतु रोहतास जिले का अध्ययन किया गया है। रोहतास एक कृषि प्रधान जिला है यहाँ के अधिकांश लोगों का मुख्य पेशा कृषि कार्य है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि फसलों में अत्याधुनिक मशीनों के प्रयोग से फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है साथ ही किसान अब खाद्यान फसलों के अलावे सब्जी, पिपरमेंट एवं फूलों के उत्पादन कि ओर आकृष्ट हो रहे है जिससे वे मौसमी बेरोजगारी से बच जाते हैं साथ ही किसानों कि आय बढ़ने से उनके रहन-सहन के स्तर में सुधार हो रहा है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रखण्डों को आधार बनाया गया है विशिष्ट अध्ययन के लिए 5 गाँवों को चुनकर शोध किया गया है इन गाँवों में साक्षरता बढ़ी है साथ ही भोजन कपड़ा और मकान जैसी मौलिक आवश्यकताओं में न केवल सुधार हुआ है बल्कि उसमें गुणात्मक विकास भी हुआ है।[1]

प्रस्तुत शोध में रोहतास जिला में कृषि फसलो के बदलते स्वरुप का लागों के जीवन की गुणावता पर पड़ने वाले प्रभााव का वर्णन है। रोहतास जिले में पिछले कुछ वर्षों से फसलो के रोपड़ में परिवर्तन हुआ हैं यहाँ के किसान पहले फसलो के अंतर्गत मुख्य रुप से खरीफ फसले के अंतर्गत चावल, मक्का, एवं रवी फसलो के अंतर्गत गेहूँ, चना, खेसारी, आलू आदि का उत्पादन करते थे लेकिन वर्तमान समय में यहाँ फूलों की खेती बढती जा रही है साथ ही साथ पीपरमेंट की खेती प्रचलन बढता जा रहा है। इससे किसानों के आर्थिक स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है।

KEYWORDS:

पलायन, आकृष्ट, पीपरमेंट, प्रमण्डल, प्रगतिशील।

<u>भोध पत्र का उदेश्य:-</u>

(क) पीपरमेंट की खेती की ओर लोगों का ध्यान आकृश्ट करना।
(ख) इससे होने वाले लाभ को लोगो को बताना।
(ग) इससे किसानों की स्थिति में सुधार लाना।
(घ) ग्रामीण किसानों का भाहर की ओर पलायन को रोकना।

परिचय– (INTRODUCTION)

रोहतास जिला पटना प्रमण्डल के अंतर्गत बिहार राज्य के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित है जिसका अक्षांशीय विस्तार **24° 31'** उतरी अक्षांश से लेकर **25° 25'** उतरी अक्षांश तथा **83° 45'** पूर्वी देशान्तर से **84° 22'** पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत हैं इसके उतर में भोजपुर एवं बकसर जिला, दक्षिण में झारखण्ड राज्य का पलामू जिला पूर्व में सोन नदी तथा पश्चिम में कैमूर जिला इसका सीमा निर्धारण करता है इसका क्षेत्रफल 3851 वर्ग कि॰ मी॰ है जो बिहार राज्य के कुल क्षेत्रफल का 2.95 प्रतिशत हैं 2011 के जनगणना के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या (2556989) व्यक्ति है।

आजादी के बाद रोहतास जिला पुराने शाहाबाद जिला का एक भाग था 1972 में रोहतास क्षेत्र को एक अलग जिला बनाया गया जिसमें शाहाबाद का दक्षिण भाग सम्मिलित था 1995 में रोहतास जिला के पश्चिमी भाग को अलग कर एक नया जिला बनाया गया। वर्तमान अध्ययन क्षेत्र नये रोहतास जिला का क्षेत्र है। रोहतास जिला में 3 अनुमण्डल हैं - सासाराम, विक्रमगंज तथा डेहरी अनुमण्डल, रोहतास जिला में 19 प्रखण्ड हैं जिला में मृदा और जलवायु के अनुसार अनेक फसलों का उत्पादन किया जाता है।[2]

कृर्शि विकास और पर्यावरण (**Agricultural Development and Environment**) भाब्द व्युत्पति के अनुसार ऐगर (**Ager**) भाब्द का अर्थ है खेत की मिट्टी तथा कल्चर (**ब्नसजनतम**) का तात्पर्य देख–रेख है। मुख्य रुप से कृर्शि कार्य के अंतर्गत जुताई, फसल लगाना, **पशुचारण**, मत्स्यपालन आदि सम्मिलित है।[3]

जिम्मरमैन के अनुसार:- श्कृर्षि के अंतर्गत के उत्पादक प्रयास सम्मिलित हैं जो भूमि पर बसे हुये मानव द्वारा उपयोग किये जाते हैं और यदि संभव हो तो मानव, पौधे एवं पशु जीवन या प्राकृति विकास की प्रणाली को अधिक उन्नत या प्रगतिशील बनाया है और इसका

लक्ष्य रखता है कि इन पद्धतियों के द्वारा अपनी वनस्पति या पशु-संबंधी पदार्थों की आवश्यकता पूरी हो।"[4]

भोध–परिकल्पना

(1) रोहतास जिला में पीपरमेंट की खेती बड़े पैमान पर आर्थिक लाभ के लिए हो रही है।

(2) पीपरमेंट की खेती के लिए किसानों को और जागरुक करना।

(3) रोहतास जिला में पीपरमेंट की खेती से होने वाले लाभ की जानकारी वहाँ के लोगो तक पहुँचाना।

रोहतास जिला में कृर्शि मुख्य रुप से मानसून पर, आधारित है। जिला में बड़े पैमाने पर धान की खेती की जाती है इस जिला को धान का कटोरा कहा जाता है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, महुआ, आदि भरपुर मात्रा में उपजाई जाती है, नगदी फसलो में मुख्य रुप से गन्ना, आलू, तेलहन, दलहन, लालमिर्च, मसाले (धनिया, अदरख, सौंफ) फूल एवं पीपरमेंट आदि की खेती होती है अधिकां"ा खेती योग्य भूमि पर खाद्यान (Food crops) का उत्पादन किया जाता है। हाल में राज्य सरकार द्वारा संचालित कृर्शि कार्यक्रमों से सिंचाइ तथा साख सुविधा से विस्तार तथा उन्नत बीजों की उपलब्धि से अनेक क्षेत्रों में व्यवसायिक स्तर पर कृर्शि की प्रगति हुई है।[5]

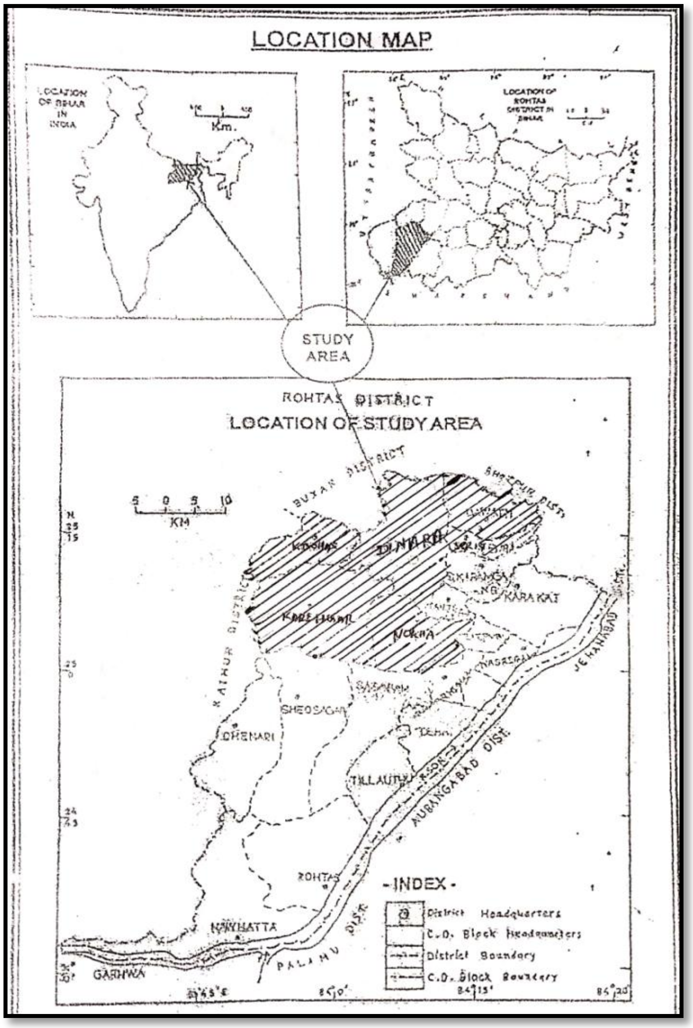

विधि–तत्रं

प्रस्तुत भोध पत्र के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय आँकड़ों की **आवश्यकता** रही है प्राथमिक आंकड़े हमने जिले के गोसलडीह, रामपुर **नरेश**, डेढ़गाँव, कबई, गुजरु, धांगो, मठीयाकोना, अन्धार, मोरौना, दुर्गाडीह, मदैना, रत्नपट्टी, चवरिया, हक्काडीह, कठईबाल, इमिरिता, कोसान्दा, चातर, नारायणपुर, कोआथ, पंचक्की, पिपरा, बभनीपहाड़ी, तेनुआ, भेलारी, कोचस, नोखा, नटवार आदि गाँवों का सर्वोक्षण किया **विशेषकर** पीपरमेंट की खेती से होने वाले लाभ के बारे में लोगों से पूछताछ की गयी है।

प्रस्तुत भोध में रोहतास जिला में पीपरमेंट की खेती से होने वाले लाभ एवं कृर्शि क्षेत्र का **विश्लेषण** है इसमें मुख्य रुप से इन गाँवों मे गोसलडीह, रामपुर **नरेश**, डेढ़गाँव, कबइ, गुजरु, धांगो, मठीयाकोना, अन्धार, मोरौना, दुर्गाडीह, मदैना, रत्नपट्टी, चवरिया, हुक्काडीह, कठईबाल, इमिरिता, कोसान्दा, चातर, नारायणपुर, कोआथ, पंचक्की, पिपरा, बभनीपहाड़ी, तेनुआ, भेलारी,कोचस, नोखा, नटवार जहाँ इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है इन क्षेत्रों में सन 2010 के आस–पास सिर्फ खाद्यान फसलों का उत्पादन होता था लेकिन 2010 के बाद से यहाँ के किसानों ने पीपरमेंट की खेती छोटे पैमाने पर करना भाुरु किया और लाभ होने पर इसका प्रतिवर्श कृर्शि बढ़ता जा रहा है।[6]

उत्पादन वर्श

वर्श	हेक्टेयर	उत्पादन लीटर में
2013	260	31200
2014	320	38400
2015	400	48000
2016	410	56400
2017	551	66120
2018	630	75000
2019	680	81600

स्त्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित

AREA AND PRODUCTION OF PEPPERMENT IN ROHTAS DISTRICT: 2013-2019

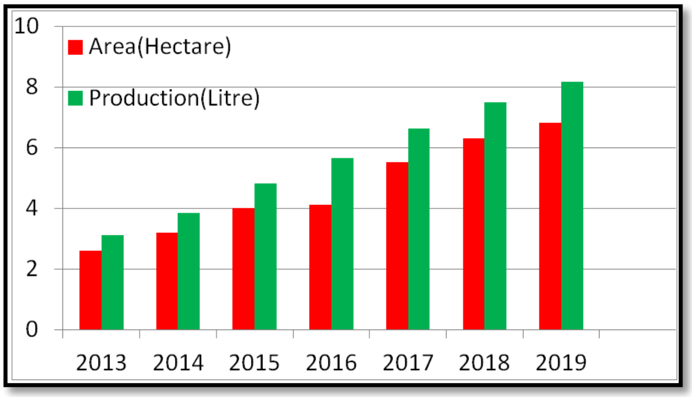

रोहतास जिला में पीपरमेंट की खेती पर नजर डालने पर यह ज्ञात होता है कि यहाँ प्रतिवर्श पीपरमेंट की खेती बढ़ती जा रही है 2013 में जहाँ यह 260 हेक्टेयर में एवं अत्पादन 31200 लीटर, वही 2014 में क्षेत्र बढ़कर 320 हेक्टेयर में एवं अत्पादन 38400 लीटर। 2015 में क्षेत्र बढ़कर 400 हेक्टेयर में एवं अत्पादन 48000 लीटर। 2016 में क्षेत्र बढ़कर 470 हेक्टेयर

56400 में एवं अत्पादन लीटर। 2017 में क्षेत्र बढ़कर 551 हेक्टेयर में एवं अत्पादन 66120 लीटर। 2018 में क्षेत्र बढ़कर 630 हेक्टेयर में एवं अत्पादन 75000 लीटर। 2019 में क्षेत्र बढ़कर 680 हेक्टेयर में एवं अत्पादन –– लीटर। इस प्रकार हम देख सकते है कि इस क्षेत्र में किसान गेहूँ की कृर्शि को छोड़कर पीपरमेंट की खेती की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं गेहूँ की कृर्शि में अनाम भण्डारण के लिए ज्यादा क्षेत्रफल की **आवश्यकता** होती थी एवं आगलगी की धटना होने पर किसानों की आर्थिक हानि होती थी इससे किसानों ने गेहूँ को छोड़कर पीपरमेंट की कृर्शि की ओर अपना ध्यान लगाया और आज वे **खुशहाल** किसान बनते जा रहे हैं।

पीपरमेंट की कृर्शि के लिए बीज के रुप में उसका डण्ठल को बारा–बांकी से लाया जाता है। इसे चारा **मशीन** से काटकर धान की बीजड़े की तरह 10 से 20 जनवरी तक डाला जाता है 15 मार्च तक बीजड़ा तैयार हो जाता है इसके बाद इसे धान के पौधो की तरह रोपा जाता हैं, इसके 20 दिन बाद निराई गुड़ाई किया जाता है पौधा बड़ा होने पर खाद दवा दिया जाता है जिससे कि पैदावार अच्छी हो सके। जब यह पौधा 15 जून तक तैयार हो जाता है तब इसका (बायलर) **मशीन** से तेल निकाला जाता है एवं उसका भण्डारण किया जाता ह इसके बाद उचित मूल्य मिलने पर पीपरमेंट के तेल को बेचा जाता है।

पीपरमेंट की कृर्शि से होने वाले लाभ

एक हेक्टेयर गेहूँ के उत्पादन में किसानों को लगभग (32 किवंटल) 3.4 टन गेहूँ का उत्पादन होता है जिसका बाजार मूल्य लगभग 48000रु होता है जबकि एक हेक्टेयर पीपरमेंट के उत्पादन में लगभग 120 लीटर तेल निकलता है जिसका बाजार मूल्य लगभग 144000रु है जो गेहूँ के मूल्य का तीन गुना अधिक हैं यही कारण है कि किसान गेहूँ की कृर्शि छोड़कर पीपरमेंट की कृर्शि करने लगे है। इससे होने वाले लाभ से वे अपने जीवन स्तर में सुधार ला रहे है जैसे बच्चों को अच्छे स्कूलो में पढाना, पक्के मकान बनाना, **आवश्यकता** अनुसार कृर्शि उपकरण खरीदना, अच्छे वस्त्र पहना, अच्छे अस्पतालों में इलाज कराना आदि इससे किसानों के रहन–सहन में सुधार हुआ है जो एक सराहनीय कदम है।

पीपरमेंट की कृर्शि से होने वाली हानि

एक तरफ पीपरमेंट की खेती से लाभ हो रहा है तो दूसरी ओर इससे कुछ हानि भी हो रही है उन क्षेत्रो में अधिक सिचाई के कारण गर्मी के दिनों में भू–जल स्तर नीचे जाने से कही–कही जल संकट का सामना पड़ सकता है। यही कारण है कि राज्य सरकार द्वारा पिछले 2 वर्शो से इसपर मिलने वाले अनुदान किसानों को नही दिया गया है।

सुझाव :– आज हमारे बिहार में जिस प्रकार बेरोजगारी बढ़ रही है एवं सरकार द्वारा **सुशासन** के नाम पर विभिन प्रकार से जनता का भोशण किया जा रहा है उस स्थिति में किसानों को चाहिए कि वे अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए इस प्रकार की व्यवसायिक कृर्शि की ओर अग्रसर हो जिससे उनका समूचित आर्थिक विकास हो सके।

REFERENCES

1. Saxena, H.M., 2010, Environmental Geography, New Delhi, Rawat Publications, P. 142.

2. राव, बी० पी० और श्रीवास्तव, बी० के, 2007, पर्यावरण और पारिस्थितिकी, गोरखपुर, वसुन्धरा प्रका''ान, पृ० सं० 307–07.

3. भारत की जनगणना, 2011.

4. भांकर, अविनाश. (2012) : रोहतास जिले में कृशि तकनीक में परिवर्तन एवं उसका जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन,पी–एच.डी. थीसिस (अप्रकाशित) म.यू., बोध गया AP-24.

5. बाला रेणु – (2013) रोहतास जिला का संसाधन भूगोल, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध मगध विश्वविद्याल बोघ गया । पृ0 –09

6. डॉ. **राधेश्याम** प्रसाद एवं **उमेश** कुमार भू–चिन्तन Vol-XXII No. 2 (December) 2017 पृ०सं० 4.8